अनुवाद कला और आजीविका

डॉ. पुष्पा
सहायक आचार्य (संस्कृत)
गौरी देवी राज. महिला महाविद्यालय,
अलवर (राज0)
म्उंपस रू काउममदं999@लीववण्बवउ
डवइण 9990605757ए 9928243003

विषय :– **अनुवाद कला और आजीविका**

भारत एक विकासशील देश है जहाँ मुख्य समस्याओं में से बेरोजगारी मूल समस्या है। प्रायः अमानवीय कृत्यों की जड़ बेरोजगारी ही है। बेरोजगारी से उभरने के लिए 'अनुवाद' कार्य द्वारा आजीविका का लाभ आज वर्तमान मे अति उपयोगी है। पढ़े–लिखे युवा रोजगार के अवसर तलाशते है। ऐसे ही अवसरों में से एक है अनुवाद कार्य, इसमें युवाओं के लिए आजीविका के उपागम रूप में अनुवादक की महती संभावनाएँ है।

समस्त अभिव्यक्ति अनुवाद है क्योंकि वह अव्यक्त को भाषा में प्रस्तुत करती है। (अनुवाद : कला और समस्याएँ, 1961, पृ. – 04)

अनुवाद शब्द का एक अर्थ हैं वाणी का प्रयोग – वाचारंभनमात्रम् (शब्द कल्पद्रुप) जो भौलिक अभिव्यक्ति का पर्याय है। ब्जवितक . जीम तमचसंबमउमदज वि जमगजनंस उंजमतपंस पद वदम संदहनंहम इल मुनपअंसमदज जमगजनंस उंजमतपंस पद ंदवजीमत संदहनंहम मूलभाषा के संदेश के समतुल्य संदेश को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की क्रिया को अनुवाद कहते हैं। सन्देशों की यह मूल्यसमता पहले अर्थ और शैली की दृष्टि से, तथा निकटतम एवं स्वाभाविक होती है। (नाइड़ा तथा टेबर 1969, पृ. 12)

''अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सार्थक अनुभव (अर्थ पूर्ण संदेश या संदेश का अर्थ) एक भाषा से दूसरे भाषा समुदाय को सम्प्रेषित किया जाता है'' (पटनायक 1968, पृ. 57)

बीसवीं सदी के भाषा विज्ञान पण्डितों ने अनुवाद या पुनसृजन युग नाम दिया। बीसवीं सदी को अनुवाद का युग कहा गया यद्यपि अनुवाद सबसे प्राचीन व्यवसाय

या व्यवसायों में से एक है तथापि जो महत्व 20वीं सदी में प्राप्त हुआ वह उससे पहले नहीं मिला।

अनुवाद शब्द – वद् धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है बोलना अथवा कहना। वद् धातु में घञ् प्रत्यय से – 'वाद्' बनता है जिसका अभिप्राय है 'पीछे', 'बाद में', व्युत्पत्ति अनु उपसर्ग वद् धातु, घञ् प्रत्यय से अनुवाद शब्द बनता है। अनुवाद का मूल अर्थ है – 'पुनः कथन' या 'किसी के कहने के बाद कहना'

शब्दार्थ चिन्तामणी कोश में अनुवाद का अर्थ – ''प्राप्तस्य पुनः कथन या ज्ञातार्थस्य प्रतिपादने अर्थात् पहले कहे गये अर्थ को फिर से कहना।

ऐतरेय ब्राह्मण – यद वाचि प्रोदितामयाम् अनुब्रूयाद् अनुब्रूयाद अन्यस्यैवैनम् उदितानुवादिनम् कुर्यात्

जैमनीय न्यायमाला – ज्ञातस्य कथमनुवाद : अर्थात् ज्ञात का कथन ही अनुवाद है।

अनुवाद एक सांस्कृतिक सेतु है। अनुवाद को ऐसी तकनीक माना गया है। जिसका आविष्कार मनुष्य ने बहुभाषिक स्थिति की विडम्बनाओं से बचने के लिए किया था। ''अनुवाद कथनतः और कथ्यतः निकटतम सहज प्रतिप्रतीकन है'' (भोलानाथ तिवारी, अनुवाद सिद्धान्त विज्ञान पृ. 17)

डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी के अनुसार ''अनुवाद के माध्यम से मानव में व्याप्त सार्वभौमिक, ऐतिहासिक और सामाजिक एकता के दर्शन होते हैं जिसमें भाषाओं के बाहरी भेद होते हुए भी मानवीय अस्तित्व के समान तत्वों का परिचय मिलता है।

सुप्रसिद्ध भाषा विज्ञानी डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार ''भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद, इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन है अर्थात् एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग।'' अतः अनुवाद निकटतम समतुल्य और सहज प्रतिप्रतीकन या यथासाध्य समानक प्रतिप्रतीकन प्रक्रिया है।

अनुवाद एक कला हैं। कला के विषय में कुछ विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत है :–

क्रोचे – अभिव्यक्ति ही कला है।

प्लेटो – कला आत्मा का जादू है।

अरस्तु – कला प्रकृति है और इसमें कल्पना भी निहित है।

टॉलस्टॉय – कला समभाव प्रचार द्वारा विश्व को एक करने का साधन है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – एक अनुभूति को दूसरे तक पहुंचाना ही कला है।

मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार – ''अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति ही कला है।

विविध विद्वानों के विचारों द्वारा एक बात तो स्पष्ट है कि कला में कुशलता की अनिवार्यता है, कुशलता जितनी अधिक होगी सुन्दरता अर्थात् सटीकता भी उतनी अधिक होगी। यह बात अनुवाद पर भी लागू होती है जितना ज्यादा प्रयास उतनी ही प्रबल अभिव्यक्ति होगी तभी एक अच्छा श्रेष्ठ कोटि का अनुवाद हो पायेगा। जितना हम अपनी कला को सँवारते जाते हैं उतनी ही सौन्दर्यानुभूति होती है। यह बात अनुवाद पर भी लागू होती है। अतः अनुवाद एक कला है, जिसे मानव उत्कृष्ट रूप प्रदान कर सकता है।''

अतः उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि किसी भाषा में कहीं या लिखी गई बात का दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद कहलाता है। सर्वप्रथम 'मोनियर विलियम्स' ने अनुवाद शब्द का प्रयोग किया था।

आजकल वर्तमान में सरकार द्वारा विविध प्रकार के पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं जिनके द्वारा अनुवाद में पारंगत होकर सरकारी व निजी दफ्तरों में आजीविका अर्जन करने का सुवर्णिम अवसर प्राप्त होता हैं बेरोजगार युवा लोग जो अनुवाद क्षेत्र में रूचि लेने लगे हैं, उनके लिए अनुवाद कला सीखना अति लाभदायक है। अनुवाद करने की परम्परा नई नहीं है वेदों में भी अनुवाद कला दूसरे रूप में प्रचलित थी। अनुवाद का वेदकालीन अथवा पूर्णरूप भाष्य और टीका रूप में प्रचलित है, ऐसा कुछ विद्वानों का मत है परन्तु भाष्य और टीका दोनों पद्धतियाँ अनुवाद शब्द के आधुनिक अर्थ के अनुसार 'अनुवाद' के अन्तर्गत नहीं आती क्योंकि इन दोनों की मूलभाषा में ही व्याख्या की जाती है, न कि अन्य भाषा में जबकि अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में किया जाता है। भारत में अनुवाद की परंपरा वस्तुतः तभी से माननी चाहिए जब भारत से बाहर की किसी भाषा में अनुवाद कार्य हुआ। श्रीमदभगवद गीता, रामायण, अभिज्ञानशाकुन्तलम, उपनिषद इत्यादि का अनुवाद भी अन्य भाषाओं में अलग–अलग समय पर हुआ। इसी प्रकार महाकवि

कालिदास की कृति 'मेघदूत' का भारत की लगभग सभी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी, जर्मन, फैंच, इटालियन, स्वीडीश, डैनिश, चीनी और तिब्बती भाषाओं में अनुवाद हुआ है। पुराणों में श्रीमदभागवत का अंग्रेजी में गद्यानुवाद जे.एम. सान्याल ने किया और संक्षिप्त रूप का डॉ. वी. राघवन ने, मार्कण्डेय पुराण का एफ.ई. पर्जिटर ने, मत्स्यपुराण का अवध के ताल्लुकेदार ने तथा देवी भागवत का स्वामी विज्ञानानंद ने किया है। द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के तुरंत बाद मशीनी अनुवाद (कम्प्यूटर अनुवाद) की प्रक्रिया भी प्रारंभ हुई परन्तु मानव जैसी सहृदयता और चेतना मशीनी अनुवाद में संभव नहीं है।

अनुवाद कार्य में निपुणता के लिए आवश्यक है कि हम लगातार प्रयासरत रहे। जिस भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना है दोनों भाषाओं का पूर्ण ज्ञान व अधिकार अनुवादक को होना चाहिए, दोनों भाषाओं के व्याकरण ज्ञान से भी अच्छी तरह परिचित होना चाहिए। एक भाषा को दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि शब्द अथवा वाक्य का कथ्य, भाव परिवर्तित नहीं होना चाहिए। एक भाषा से दूसरी भाषा में परिवर्तित करते समय यह भी ध्यान देना चाहिए कि अर्थ का अनर्थ न हो। अनुवाद कार्य जितना आसान दिखता है उतना आसान नहीं होता है। जहाँ अच्छे अनुवादक के लिए अनुवाद कार्य एक खेल के समान रोचक व सरल है, वहीं पाठक के लिए उसकी खूबसूरती कला का रूप धारण कर लेती है। अजंता, ऐलोरा गुफाओं की मूर्तियों के रचनाकार को शायद यह पता नहीं होगा।

अनुवाद केवल कला ही नहीं क्योंकि एक शिक्षक अनुवाद द्वारा अपने शिष्यों में नैतिक, सामाजिक मूल्यों का संचार करता है और साथ ही यह उसकी आजीविका का माध्यम है। एक अनुवादक को प्रति पृष्ठ के हिसाब से पैसे दिये जाते हैं। अनुवाद भाषा के साथ जुड़ा कार्य है इसमें अनुवादक की भाषा से लगाव भी जरूरी है। यदि भाषा पर पकड़ होगी तो अनुवाद उतना ही सार्थक होगा। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अनुवाद एक उत्पाद है, उसकी गुणवत्ता जितनी अच्छी होगी माँग भी उतनी रहेगी। अतः अनुवादक के लिए अनुवाद की गुणवत्ता को बेहतर से

बेहतरीन करने की अति आवश्यकता होती है। जितना अनुवाद अच्छा उतना अच्छा पैसा।

अनुवाद को संस्कृति और ज्ञान का पुल कहा जाता है परन्तु विकसित और विकासशील दोनों ही देशों में स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। अनुवादक संघ का उद्देश्य भारत में अनुवाद के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है। महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. देवराज का कहना हे कि अनुवाद दो भिन्न संस्कृतियों को जोड़ने का माध्यम है। भारतीय अस्मिता की पहचान बनाने के लिए अनुवाद एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में उभर रहा हैं अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की वैश्विक संभावनाएँ और बढ़ रही है। सूचना प्रोद्योगिकी के विकास में अनुवाद की महती भूमिका है। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से आज विभिन्न क्षेत्रों में विविध संस्थानों में किये गये शोध को हम अपने डेस्कटॉप पर देख सकते हैं और समीक्षा कर सकते हैं। प्रो. देवराज के अनुसार विभिन्न भाषाओं में किये जा रहे उपयोगी शोध को हिन्दी और अन्य भाषाओं में सबके लिए उपलब्ध कराना अनुवाद द्वारा ही संभव है। इस कार्य के लिए अनुवाद और अनुवाद प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण योगदान है।

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद व दुभाषिये के रूप में भी रोजगार की अपार संभावनाएँ हैं। शैक्षणिक संस्थानों में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुवादक एवं दुभाषिये के रूप में, शैक्षणिक संस्थाओं में अध्यापन के क्षेत्र में, राजभाषा अधिकारी रूप में, बी.पी.ओ. एवं कॉलसेंटर में विदेशी भाषा इंटरप्रिटर के रूप में, पर्यटन उद्योग एवं होटल प्रबंधन के क्षेत्र में विभिन्न एयरलाइन्स, पुस्तक पब्लिकेशन, विदेशी कम्पनियाँ, पर्यावरण उद्योग, पुस्तक अनुवाद, कैटलॉग तकनीकी डेटा, राजनीतिक भाषण तैयार करने इत्यादि में अनुवाद प्रौद्योगिकी क्षेत्र में मशीनी अनुवाद और सिनेमेटिक अनुवाद का कार्य, फिल्म एवं टी.वी. में अनुवादक रूप में, पत्रकारिता में अनुवादक के रूप में रोजगार की असीम संभावनाएँ है। वैश्वीकरण के इस दौर में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद की महत्ता बढ़ती जा रही है। इसे बहुआयामी एवंम स्वायत्त अनुशासन के रूप में पहचान मिल चुकी है। इसीलिए विश्वविद्यालय में अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ प्रारंभ हुआ। महात्मा गाँधी

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय एकमात्र अद्वितीय विश्वविद्यालय है इसके अन्तर्गत कार्यरत अनुवाद प्रौद्योगिकी विभाग देश का एकमात्र ऐसा विभाग है जो अनुवाद की तकनीकी, प्रणालीगत और रोजगारपरक संभावनाओं को यथार्थ में परिणपत करने के लिए सतत प्रयासरत है। यहाँ हिन्दी अनुवाद में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा, प्रयोजनमूलक हिन्दी और अनुवाद में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा तथा अनुवाद प्रौद्योगिकी में एम.ए., एम,फिल, पीएच.डी. की सुविधाएँ उपलब्ध है।

भाषाओं के क्षेत्र में अवसर की बात करें तो फ्रेंच भाषा अंग्रेजी के बाद विश्व की दूसरी लोकप्रिय भाषा मानी जाती है। फ्रेंच अंग्रेजी से काफी मिलती–जुलती भाषा है। इसी कारण भाषा के जानकारों की डिमांड काफी है। फ्रेंच भाषा के उपरान्त जर्मन भाषा को अवसरों की भाषा कहते हैं। यदि फ्रेंच भाषा पर अधिकार है तो आस्ट्रेलिया, जर्मन सहित कई देशों में रोजगार के अनगिनत अवसर उपलब्ध होते हैं, इसी कारण भारतीयों में फ्रेंच भाषा सीखने की ललक सबसे ज्यादा है। यदि अंग्रेजी में अच्छा अधिकार हो तो जापानी भाषा सीखी जा सकती है। जापानी भाषा रोजगार परक होने के कारण रोजगार के अत्यधिक अवसर प्रदान करती है। मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के कारण रूसी भाषा का क्रेज हिन्दुस्तान में वर्षों से बना हुआ है। रूसी भाषा रोजगार के सुलभ अवसर प्रदान करने में उपयोगी है।

परम्परागत रूप से अनुवाद किताबों के प्रकाशन और सरकारी कामकाज तक ही सीमित रहा है। मगर वैश्वीकरण और इन्फोटेनमेंट ने इसे एक नया क्षितिज दिया है। आज गैर सरकारी संगठनों (एन.जी.ओ.), अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं और कारोबारी जगत में भी अनुवाद की आवश्यकता होती है। कंपनियों को अपनी बात ग्राहकों तक पहुँचाने के लिए विज्ञापन से लेकर ब्रॉशर तक हिन्दी में प्रकाशित कराने पड़ रहे हैं। अब अनुवाद के कार्यक्षेत्र का जबरदस्त विस्तार हुआ है। यह वहीं क्षेत्र है जो अनुवादकों को अपनी ओर खींच रहा है। जहाँ प्रति अनुवाद के लिए प्रति शब्द एक से दो रूपये का भुगतान होता है और कई परिस्थितियों में तो पाँच रूपये प्रति शब्द मेहनताना भी मिलता है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के भारत आने के बाद इस क्षेत्र में रोजगार की आपार संभावनाएँ बढ़ी है। सरकारी क्षेत्र में 'जूनियर ट्रांसलेटर

के पद पर सरकारी नौकरी पा सकते हैं। विज्ञापन का जमाना है। विज्ञापन एजेंसियों में भी अनुवादक के पद पर कार्य कर सकते हैं।

सभी भारतीय भाषाओं में होता है। उदाहरण के लिए जैसे यदि अंग्रेजी में भाषण दिया जा रहा है तो साथ–साथ उसे एक अनुवादक हिन्दी में और अन्य अनुवादक किसी और भाषा में बोलता है। सरकार द्वारा चल रहे मीडिया हाउस दूरदर्शन और आकाशवाणी में अनुवादकों की महती आवश्यकता होती है क्योंकि यहाँ से प्रसारित समाचार अनेक चैनलों पर विविध भाषाओं में होते हैं। भारत के सभी बैंकों में भी अनुवादक का पद होता हैं जो वाणिज्य से जुड़ी सभी नीतियों और नियमों का अनुवाद करते हैं। इसके अतिरिक्त न्यायालय में भी रोजगार के अनेकों अवसर उपलब्ध होते हैं जो कानूनी मामलों पर अनुवाद करते हैं।

आज वैश्वीकरण के दौर में जब दो अलग–अलग भाषा के लोग संचार और व्यापार कर रहे हैं तो अनुवाद की भूमिका और बढ़ जाती है अनुवाद कला है, मशीनी कार्य नहीं है। कम्प्यूटर के अस्तित्व में आने से अनुवाद आसान हो गया है परन्तु पूरी तरह कम्प्यूटर पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। मशीनें 70 प्रतिशत तक अनुवाद कर सकती है 30 प्रतिशत के लिए मानव मस्तिष्क की आवश्यकता होती है। बड़ी–बड़ी निजी या सरकारी कम्पनियों में अनुवाद अनुवादक द्वारा कराया जाता है, ये सभी अनुवादक प्रोफेशनल होते हैं, इन्हें अनुवाद करने के लिए अच्छा वेतन दिया जाता है। बाजारवाद के दौर में आज प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में अनुवादक की आवश्यकता होती है।

सरकारी विभागों में अनुवादक की आवश्यकता सरकारी दस्तावेजों का अनुवाद करने के लिए होती है। भारत में राजभाषा अधिनियम के तहत सभी सरकारी दस्तावेजों का अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषा में होना जरूरी है। इसके अतिरिक्त राज्य सरकारों में क्षेत्रीय भाषाओं को भी मान्यता दी जाती है। इन सभी दस्तावेजों के अनुवाद के लिए अनुवादक की आवश्यकता होती है।

सरकारी प्रशासनतंत्र बहुशाखा वाला वृक्ष जैसे जिसके अधीन अनेक कार्य होते हैं। संसद में अनेक भाषा–भाषी के भाषण जिसके लिए कुशल अनुवादक की आवश्यकता होती है। संसद में अनेक विधेयक और प्रतिवेदन तैयार किये जाते हैं

जिसके लिए अनुवादकों की नियुक्ति की जाती है। न्यायालयों में भी अनेक प्रकार के दस्तावेजों को तैयार करने के लिए भी अनुवादकों की आवश्यकता होती है। प्रशासन के अनेक विभागों जैसे – विदेश विभाग, कूटनीति विभाग, गुप्तचर विभाग, पुलिस विभाग इत्यादि में अनक विदेशी भाषाओं में कार्य होता है। विविध प्रकार के प्रमाण–पत्र, दस्तावेज आदि विदेशी भाषाओं में होते हैं जिसका अनुवाद भी अनुवादक द्वारा किया जाता है।

संचार माध्यम किसी भी देश में रक्त धमनियों के समान है, जो देश की सजीवता का भी प्रतीक है। सम्प्रेषण का सरल, सस्ता व उपयोगी माध्यम समाचार पत्र न केवल अपने देश की अपितु विदेशों की खबरों से हमें रूबरू करवाते हैं। विविध भाषाओं में होने के कारण कुछ सूचना अनुदित भी होती है। जैसे – फ्रांस के समाचार पत्र में भारत के सांस्कृतिक समाचार फ्रेंच भाषा में प्रकाशित होते हैं। प्रायः राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समाचार एजेंसियां अनुवादक नियुक्त करती है। ये कुशल अनुवादक वांछित सामग्री का शीघ्र अनुवाद करके दे देते हैं। विदेशों में विशेष प्रकार की अनुवाद सेवा को 'प्रमाणित अनुवादक' कहते हैं। सरकारी कार्यकलापों में समय–समय पर अनेक प्रकार के अनुदित दस्तावेज प्रस्तुत किये जाते हैं। इन दस्तावेजों के अनुवादकों को इन्हें सही प्रमाणित करना होता है, जिसके लिए प्रमाण–पत्र देने का अधिकार प्रमाणित अनुवादकों को होता है। इन प्रमाण–पत्रों को जारी करने की संख्या में वृद्धि के साथ–साथ अनुवादकों का पारिश्रमिक भी बढ़ता जाता है। अनुवाद कार्य की मात्रा व विविधता के बढ़ने से अनुवाद चेतना अत्यंत सशक्त हो गई है। विदेशों में अनुवादकों के संगठन, अनुवादक हित संरक्षण संस्थाएँ, अनुवादक निर्देश सूचियाँ, अनुवादक डायरेक्टरी भी होती है, जिसमें भिन्न–भिन्न विषयों तथा क्षेत्रों के अनुवादकों का प्राप्ति स्थान उपलब्ध होता है। विभिन्न प्रकार के अनुवाद विशेषज्ञों के नाम, पता व उनके ग्रन्थों के नाम आसानी से मिल जाते हैं। अनुवाद सूचना केन्द्र समय–समय पर विभिन्न रजिस्टर, सूचियाँ आदि भी प्रकाशित करते हैं जैसे – ट्रांसलेशन सेंटर शिकागो, इन्टरनेशनल ट्रांसलेशन सेंटर नीदरलैंड, ब्रिटिश लाइब्रेरिज लैंडिंग डिवीजन बोस्टर्न इनके अतिरिक्त यूनेस्को, पैरिस, इंग्लैंण्ड आदि में भी अन्तर्राष्ट्रीय अनुवाद सूचना केन्द्र है।

धार्मिक और दार्शनिक क्षेत्र में भी अनुवादकों के लिए आजीविका के सुलभ अवसर हैं जैसे किसी धर्म विशेष की विशेषताओं का प्रचार करने के लिए अनुवादकों की आवश्यकता होती है। इंग्लैण्ड, अमेरिका में ईसाई धर्म का प्रचार करने वाली अनेक संस्थाएँ अनुवादकों की नियुक्ति करती है। बाइबल सोसाइटियों की शोध समितियाँ नियमित रूप से अनुवाद संशोधन एवं नए अनुवाद की तैयारी में लगी रहती है। अनेक दार्शनिक, धार्मिक संस्थाएँ प्रचार की दृष्टि से विदेशी भाषाओं से पुस्तिकाएँ, पुस्तक और पत्रिकाएँ नियमित रूप से प्रकाशित करती है। जिसके लिए पूर्णकालिन अनुवादकों की आवश्यकता होती है।

उपसंहार :–

ध्वन्यात्मक प्रतीकों को दूसरी भाषा में यथावत रूपांतरित और प्रतिस्थापित करना अनुवाद का कार्य होता है। आज वर्तमान में जब युवावर्ग बेरोजगारों के दलदल में धँसता जा रहा है, वहीं आज अनुवाद क्षेत्र में असीमित सम्भावनाएँ व्याप्त है। जरूरत है उन सभी जानकारियों से युवाओं को परिचित कराया जाए। पर्यटन क्षेत्र में अनुवाद की अनगिनत संभावनाएँ है। इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में विविध भाषाओं के साहित्य का अनुवाद, समय–समय पर प्रकाशित नवीन शोधपत्रों के अनुवाद हेतु भी अनुवादक की आवश्यकता होती है। पहले किसी भाषा में उपयोगी ग्रन्थ का अनुवाद करने के लिए ही अनुवादक की आवश्यकता होती थी परन्तु आज वर्तमान वैश्वीकरण के दौर में 'अनुवाद द्वारा इन भाषाओं की सीमाओं को पार कर सकते हैं। किसी ग्रन्थ का प्रसार–प्रचार करने में अनुवादक की भूमिका अहम होती है। विश्व बन्धुत्व के सुदृढीकरण के लिए भी अनुवाद की उपयोगिता है तथा विश्व संस्कृति तथा सभ्यताओं के विकास में, मानवीय ज्ञान में विभिन्न संदर्भों संकल्पनाओं, सिद्धान्तों की जानकारी, आर्थिक, वैज्ञानिक औद्योगिक प्रगति में भी अनुवाद बहुत उपयोगी है। अतः आज अनुवादक के कार्य क्षेत्र में विस्तार हुआ है। अनुवाद में देश व भाषाओं की सीमाओं को लाँघ दिया है। आज हम देखते हैं विविध नाटक व फिल्में बन रही है जो अंग्रेजी, बंग्ला, गुजराती, तमिल आदि अन्य भाषाओं से दूसरी भाषा में (हिंदी) अनुवादित होती है और प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचती है। इसी प्रकार विदेशों में भी जब हिन्दुस्तानी पर्यटक जाते हैं वहाँ की सम्पर्क भाषा

फैंच, चाइनीज, स्पैनिश इत्यादि होने से कार्यसिद्धि में कठिनाई आती है इसलिए वहाँ दुभाषिये अर्थात् जो दोनों भाषाओं पर अपना दखल रखता है उसके लिए इस क्षेत्र में और विविध पर्यटक भी पर्यटन स्थल पर अपनी भाषा में उस अमुक स्थान की जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसे में वहाँ अनुवादक की माँग बढ़ जाती है। अनुवाद क्षेत्र में लगातार बढ़ती माँग को देखते हुए विविध प्रकार के पाठ्यक्रमों का संचालन विभिन्न संस्थाओं द्वारा कराया जाता हैं। रोजगार प्रदान करवाने में अनुवाद का कार्य अति उपयोगी है। अनुवाद की आवश्यकता विविध सरकारी तथा निजी उपक्रमों में होती है। ऐसे ही स्थान है प्रधानमंत्री कार्यालय, लोकसभा, राज्यसभा और संसद जहाँ पर अच्छे अनुवादकों की आवश्यकता होती है। अतः प्रौद्योगिकी के विकास के साथ–साथ आज विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में अनुवादक व अनुवाद कार्य की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। अतः यह क्षेत्र व्यवसाय से जोड़ने वाला है क्योंकि न केवल सरकारी दफ्तरों में हम अपना स्वयं का भी व्यवसाय कर सकते हैं। जैसे – विविध उपयोगी पुस्तकों के अनुवाद कार्य करके इत्यादि। आज कहीं भी अनुवादक को बेरोजगार रहने की आवश्यकता नहीं है परन्तु अनुवादक को अच्छे अनुवाद कार्य के लिए सदैव प्रयासरत रहना चाहिए जिससे हम हिन्दी व अन्य भाषाओं के उत्थान में महत्वपूर्ण सहभागिता कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

01. अनुवाद विज्ञान की भूमिका, कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन।
02. अनुवाद विज्ञान : सिद्धान्त एवं प्राविधि, भोलानाथ तिवारी।
03. अनुवाद विज्ञान : सिद्धान्त एवं अनुप्रयोग, सम्पादक – डॉ. नगेन्द्र
04. व्यवहारिक अनुवाद, एन.ई. विश्वनायन अय्यर
05. राष्ट्र भाषा हिन्दी का स्वरूप विधान – डॉ. रामेश्वर मिश्र, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली
06. अनुवाद की व्यवहारिक समस्याएँ – डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली।

07. काव्यानुवाद की समस्याएँ – डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली।

08. अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार – डॉ. जयन्ती प्रसाद, नौटियाल, दिल्ली।